डॉ0 राम मनोहर लोहिया की दृष्टि में जाति–प्रथा एवं आरक्षण

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

डॉ0 लोहिया जाति–प्रथा के खिलाफ थे। वे इसे समाज को एक कलंक मानते थे और जाति प्रथा को ही अनेक समस्याओं के मूल में स्वीकारते थे। डॉ0 लोहिया का मानना है कि "जाति और योनि इन दो कटघरों को खतम करने का सचेत और निरन्तर प्रयत्न नहीं किया जाता तब तक गरीबी मिटाने का प्रयत्न छल–कपट है।" गरीबी और विषमता को समाप्त करने के लिये हमने लोकतन्त्र का चयन किया। इस सम्बन्ध में डॉ0 लोहिया के विचार डॉ0 अम्बेडकर से मिलते थे। डॉ0 लोहिया का मानना था यदि आर्थिक विषमता समाप्त हो जाय तो जातिगत भेद और गैर बराबरी स्वतः समाप्त हो जायेगी। इस बिन्दु पर कम्युनिष्ट और समाजवादी विचारधारा में समानता है। डॉ0 लोहिया का कहना था कि यद्यपि यह दोनों विचारधारायें एक दूसरे से भिन्न हैं किन्तु इस बिन्दु पर दोनों का चिन्तन समान था। समाजवादी आन्दोलन के इतिहास में उन्होंने लिखा –''दोनों में बहुत लड़ाई रही है, अलगाव है, दोनों के सिद्धान्त एक से नहीं है, लेकिन एक बात दोनों ने समझ रखी थी कि अगर आर्थिक गैर बराबरी खत्म करोगे तो जातिगत भेद और गैरबराबरी अपने आप खत्म हो जाएंगे।''डॉ0 लोहिया जाति प्रथा के विरोधी थे, उनके अनुसार जाति प्रथा समाजवाद के मार्ग का मुख्य अवरोधक है। जाति समाज में असमानता उत्पन्न करती है। डॉ0 लोहिया ने जाति को जड़ वर्ग की संज्ञा दी है क्योंकि जाति की जकड़ ने भारत के सामाजिक जीवन को प्राण रहित कर दिया है। इस संबंध में डॉ0 लोहिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है जीवन के बड़े–बड़े तथ्य जन्म, मृत्यु, शादी, भोज, ब्याह और सभी रस्में, जाति के चौखटे में होती हैं.... ऐसे मौकों पर दूसरी जाति के लोग किनारे पर रहते हैं, जैसे वे तमाशबीन हों"। जाति प्रथा के कारण निम्न वर्ग शोषण का शिकार बनते हैं, जाति उन्हें उन्नति के अवसरों से अलग रखती है। डा0 लोहिया के अनुसार इन सबका सम्मिलित परिणाम होता है–राष्ट्रीय विकास में कमी।

यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि जहॉ एक ओर डॉ0 लोहिया ने द्विजों से अपना वर्चस्व समाप्त करने की अपेक्षा रखी। वहीं दूसरी ओर डॉ0 लोहिया ने शूद्रों को दिये गये अवसरों की यथार्थता का विश्लेषण भी करते हुये उनकी कमजोरियों का निवारण करने के संबंध में कहा हैं कि "शूद्रों के भी दोष हैं। जाति की संकीर्णता उनमें और भी है। अफसरी की जगह पाने के बाद शूद्र की कोशिश रहती है कि वह बिरादरी के जहर के द्वारा अपनी जगह को कायम रखे। वह अपनी दृष्टि को जल्दी व्यापक नहीं बना पाता और व्यापक विषयों की बहस में पिछड़ जाता है। अगर द्विज हजारों लाखों पर सफाई का हाथ मारता है तो शूद्र अठन्नी रुपये के मामले में इस तरह फंसता है कि उसकी कलई खुल जाए। अब तो न सिर्फ शूद्रों को उठाना है और जगह–जगह उनको नेतृत्व के आसन पर बैठना है बल्कि बार–बार सहारा देकर और सलाह तथा बहस के द्वारा उनकी आत्मा को जगाना और

सुसंस्कृत करना है जिससे देश का बंधा पानी बहे और द्विज तथा शूद्र अपने दोषों से मुक्त हो। राजकीय क्रान्ति की बात बिलकुल व्यर्थ है, जब तक सामाजिक उथल–पुथल की चेष्टा साथ–साथ न चले। अब तो देश में वही राजनीतिक दल कुछ कर पायेगा, जो इस सामाजिक उथल–पुथल का अगुआ बने और अपने संगठन द्वारा जतलाए कि एक नया सवेरा आने वाला है। डॉ0 लोहिया का विचार था कि नामों के पीछे या आगे जातीय उपनाम नहीं लिखना चाहिए। इसके पीछे उनका तर्क था कि भारत के किसी भी ऋषि मुनि के नाम के आगे पीछे जातीय उपनाम नहीं हैं। यहॉ तक कि महानायकों के नाम भी इस उपाधि से रहित हैं। जब हम अनेक उपनाम वाले लोगों के साथ वार्तालाप करते हैं या नाम पूछते हैं तो इससे एक विभेद पैदा होता है जिससे ऊंच–नीच छोटे–बड़े की भावना उद्‌बुद्ध होती है। उनका कहना है –''हिन्दुस्तान में दिन–रात भावात्मक एकता चिल्लाते रहते हैं। इसी सम्बन्ध में जो जाति के नाम होते हैं इनको भी खत्म किया जाए। यह अपनी जगह पर विल्कुल सही बात है।'' डा0 लोहिया छुआछूत के भेदभाव एवं ऊँच–नीच को अपने समाज की घिनौनी जड़ मानते थे। जीवनपर्यन्त वह दुःखी लोगों के दुःख दर्द को दूर करने के लिए संघर्षरत रहे, अपने सिद्धान्तों की खातिर उन्होंने झुकना नहीं सीखा। राममनोहर लोहिया ने जातिप्रथा को नष्ट करने के भरसक प्रयास किये ''ऊँची जाति के युवजनों को अब अपनी पूरी ताकत से उठना चाहिए। इस नीति में अपने स्वार्थों पर हमला देखने के बजाय, इसमें जनता को नवजीवन देने की क्षमता के रूप में उसे देखना चाहिए। आखिर ऊँची और नीची जातियों के बहुत ही कम विवाह सम्बन्धों में द्विज और हरिजन के बीच होने वाले विवाह तो देखे जा सकते हैं पर शूद्र और हरिजन के बीच नहीं। औरतों शूद्रों, हरिजनों, मुसलमानों और आदिवासियों का अब सर्वोपरि ध्येय यही होना चाहिए कि उन्हें ऊँची जातियों की सभी परम्पराओं और शिष्टाचारों का स्वांग नहीं रचना है, उन्हें शारीरिक श्रम से कतराना नहीं है, व्यक्ति की स्वार्थोन्नति नहीं करनी है, तीखी जलन में नहीं पड़ना है, बल्कि कि यह समझ कर की वे कोई पवित्र काम कर रहे हैं उन्हे राष्ट्र के नेतृत्व का भार वहन करना है।''

सामाजिक दृष्टिकोण से जाति व्यवस्था इसलिए घातक है कि यह समाज में भेदभाव की भावना में वृद्धि करती है जिससे निम्न जातियों में हीन भावना की उत्पत्ति होती है। जाति प्रथा के कारण सभी जातियों को विकास के समान अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते। डॉ0 लोहिया ने जाति बंधन ढीले करने हेतु सुझाव भी दिये जिनमें प्रमुख हैं– (1) सहभोज (2) अन्तर्जातीय विवाह (3) प्रत्यक्ष चुनाव तथा (4) वयस्क मताधिकार।

डॉ0 लोहिया की जाति तोड़ो नीति उनके चिन्तन की सामाजिक क्रांतिकारिता को दर्शाती है कि जाति का कटघरा भारतीय समाज के केवल वैयक्तिक पसंद या न पसंद से नही टूटने वाला है। इसको तोडंने के लिए संगठन सरोकार और सर्मपण की आवश्यकता है। वे जातियों के जातिवादी संगठन के सर्मथक नहीं है। राजनीति में जाति के अदभूत प्रयोग करता के रूप में लोहिया ने विभिन्न जातियों को संगठित होने का लक्ष्य दिया। उनका यह नारा कि "सोशलिस्टों ने बंधी गांठ पिछडे पावें सौ में साठ" अर्थात् वे भारतीय जनसंख्यात्मक संरचना में जातिगत समीकरण के आधार पर पिछड़ों को सौ में से साठ प्रतिशत आरक्षण का पक्ष लेते हैं। उनके पिछड़ों में आदिवासी, शूद्र एवं पिछड़ी जातिया तथा इन सभी की महिलायें सम्मिलित हैं।

डॉ0 अम्बेडकर एवं जयप्रकाश नारायण की भांति डॉ0 लोहिया ने भी अस्पृश्यता को जाति व्यवस्था का परिणाम माना और उसका विरोध

किया। हरिजनों के मंदिर प्रवेश की समस्या के निराकरण के लिये उन्होंने हरिजन मंदिर प्रवेश आंदोलन चलाया। डॉ0 लोहिया ने अस्पृश्यता की भावना के कुपरिणामों का उल्लेख करते हुये कहा कि अस्पृश्यता की भावना के कुपरिणामों का उल्लेख करते हुये कहा कि अस्पृश्यता के कारण न केवल राष्ट्रीय विघटन और अवनति हुई है वरन् इसके परिणामस्वरूप भारत को अंतर्राष्ट्रीय अपमान तथा उपेक्षा भी सहन करनी पड़ी है। यदि हमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी पहचान बनानी है तो हमें अस्पृश्यता निवारण के लिये प्रभावात्मक कदम उठाने होंगे। इस समस्या के निवारण हेतु सुझाव इस प्रकार थे–हरिजनों में स्वाभिमान व निर्भयता की भावना विकसित करना, हरिजनों में शिक्षा का प्रसार, हरिजनों को समान आध्यात्मिक अधिकार प्रदान करना, हरिजनों के साथ मानवोचित व्यवहार।

अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया एवं अफ्रीका महाद्वीप के कई देशों में भी रंगभेद की नीति अपनी घृणित अवस्था में थी । दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद नीति के दुष्परिणामों को दुनिया देख चुकी है। आज हम इक्कीसवीं सदी के विश्व की बात करते हैं तथा मानवता एवं मनुष्य की प्रतिष्ठा की दुहाई देते हैं परन्तु आज भी कभी–कभी क्रिकेट के मैदानों, हवाई अड्डों एवं अन्य सार्वजनिक जगहों पर नस्लीय भेदभाव की घटनाएँ घटित हो जाती हैं । लोहिया रंगभेद की नीति के बड़े आलोचक थे तथा उन्होंने इसको निर्मूल करने के प्रभावकारी उपाय भी बताए हैं। उनका मत था कि मनुष्य मात्र में समता पैदा करना समाजवाद का मुख्य लक्ष्य होता है। किसी व्यक्ति अथवा समुदाय विशेष को हीन दृष्टि से देखना इसलिए उचित नहीं है कि उसका रंग काला है अथवा गोरा। डा0 लोहिया के साथ अमरीका में रंग के आधार पर दुर्व्यवहार हुआ तथा अमरीकी सरकारी प्रतिनिधि ने क्षमा भी माँगी परन्तु लोहिया जी ने कठोरता से कहा कि मुझसे माफी माँगना व्यर्थ है। माफी तो अमरीकी राष्ट्रपति को अश्वेतों से माँगनी चाहिए जिनके प्रति गोरी चमड़ी वाले अन्याय कर रहे हैं ।

रंगभेद से उत्पन्न निरंकुशता के लिए डॉ0 लोहिया जी गोरे व्यक्तियों के साथ अश्वेतों को भी समान रूप से उत्तरदायी मानते थे। अश्वेत लोग हीन भावना से ग्रस्त हैं उन्हें इस प्रवृत्ति को त्याग देना चाहिए। आज विश्व में अश्वेत व्यक्तियों का बहुमत है। श्वेत व्यक्तियों द्वारा बनाई गई गलत नीतियों का उन्हें डटकर विरोध करना चाहिए। आधुनिक समय में इस प्रकार की विभेदकारी भावना के लिए कोई स्थान नहीं है और जहाँ भी ऐसी असमानताएँ मौजूद हैं वहाँ उनके उन्मूलन के प्रयास करते रहना चाहिए। डा0 लोहिया लिखते हैं कि ''इस सिद्धान्तहीन, भ्रष्ट और अमानवीय धारणा के विरुद्ध एक क्रांति की आवश्यकता है। समाजवाद की स्थापना के लिए आर्थिक और राजनैतिक क्रांति के साथ–साथ रंगभेद और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध भी क्रांति निहायत आवश्यक है।''

डॉ0 लोहिया के लिए आरक्षण का उद्देश्य शूद्रों को सफेदपोश बनाना नहीं था भारत की जातिप्रथा को हमेशा के लिए तोड़ना ही उनका एक मात्र सामाजिक लक्ष्य था, ताकि भारत फिर खंडित न हो जाए, पीछे न हटे। ब्राह्मणवादी व्यवस्था की सबसे बड़ी जीत इसमें रही कि पिछड़ा जब भी राजनीति में शक्तिशाली हुआ, उस राजनीति का इस्तेमाल जाति प्रथा के तोड़ने के लिए कर नहीं सका, बल्कि पिछड़ों में आपसी दुराव को बढ़ावा मिला। अगर जाति–पांति की दीवारें न हों तो जाने कितने द्विज लड़कों का ध्यान धोबियों और भंगियों की तरफ खिचें, जो उनके और देश के लिए कल्याणकारी हो। उसी तरह न जाने कितने शूद्रों और अछूतों का मन मसोसकर रह जाता होगा कि बृहमनियों और बनियाइनों की दुनिया देख नहीं पाते।''

आरक्षण के रूप में सौ में से साठ की बात करते हुये डा0 लोहिया प्रत्येक दलित एवं पिछड़ी जाति की स्त्रियों के लिए अलग–अलग आरक्षण की बात करते है। राजकिशोर ने अपनी पुस्तक स्त्री के लिए जगह में लिखा है कि समाज के पुरोधा जब समाज में कोई परिवर्तन नहीं चाहते तब सकारात्मक सिद्धांतों को दर किनार कर देते है। लोहिया की प्रासगिकता के संदर्भ में भी यही हुआ है कि समग्र लोहियावादी संपूर्ण वंचित जाति समूहों के संगठन समूहों की अपेक्षा अपनी–अपनी जाति के संगठनों को बनाने में उलझ गये है, तथा महिला आरक्षण के सवाल पर आज संसद में सबसे बडे अवरोधक के रूप में लोहियावादी खडे हैं। यद्यपि इनकी नियत में कोई संदेह नही किया जा सकता। दोनो ही पक्षों को लेकर लोहिया के सिद्धांतों के अनुरूप ये लोहियावादी दृढप्रतिज्ञ है। वास्तव में वैसा ही चाहते है जैसा लोहिया चाहते थे। परंतु रण शिल्प कौशल के धरातल पर ये चुक गये और लोहियावाद के विरूद्ध मजबूत दीवार वनकर खडे हो गये। 16 दिसम्बर ,सन् 1959 ई0 को लखनऊ में डा0 लोहिया ने अपने उद्बोधन में कहा था कि इतिहास के सूक्ष्म अध्ययन से यह पता चलता है कि भारतवर्ष की 1000 वर्ष की दासता का कारण जाति है, आंतरिक झगड़े और छल कपट नहीं। उनका कहना था कि 'जीवन में बड़े–बड़े तथ्य जन्म, मृत्यु, शादी, भोज और सभी रस्में जाति के चौखटे में ही होती हैं.....। ऐसे मौकों पर दूसरी जाति के लोग किनारे पर रहते हैं, अलग और, जैसे वे तमाशबीन हों। डा0 लोहिया अन्तर्जातीय विवाह के ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय विवाह के भी प्रबल समर्थक थे। वर्तमान में भारत की राजनीति में पिछड़े एवं दलित वर्ग के कई नेता उभर कर सामने आए हैं परन्तु उनमें भी कमोबेश वही दोष विद्यमान हैं जो कि उच्च वर्ग के नेताओं में थे। हमें डा0 लोहिया के उन विचारों से सीख लेनी चाहिए जिनके द्वारा उन्होंने पिछड़ों के उत्तम तरीके से उत्थान की बात कही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाhधी मार्ग, इलाहाबाद – 211001, पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास – चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- भाटिया पी.आर. – भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमारआनन्द, कुमार, मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम मनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- संघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण :

2009

- ❖ सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- ❖ त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- ❖ शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- ❖ वर्मा श्रीकांत रचनावली,खंड–3
- ❖ कथाक्रम, अप्रैल–जून 2011
- ❖ कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- ❖ शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- ❖ पाठक नरेन्द्र–कर्परी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008

Copyright © 2014, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.